पाठ 14

जनसंख्या एक संसाधन के रूप में :- जनसंख्या शब्द का प्रयोग मानव समूह या मानव संख्या के रूप में किया जाता है | जनगणना में भी यही अर्थ लिया जाता हैं | प्राथमिक तौर पर जनसंख्या का मतलब लोगों के समूह की संख्या से हैं, परन्तु जनसंख्या एक संसाधन मानव संसाधन के रूप में भी माना जाता हैं | संसाधन क्या हैं ? यह वह है जिसे इस्तेमाल और पुनःइस्तेमाल किया जा सके ।

कमरे में चारों ओर देखों हमें किताबें, कापियाँ, कलम, लकड़ी के सामान, एवं अन्य वस्तुए पातें हैं | हम अपने इन संसाधनों के बारे में विचार करते हैं और इन्हें अपने दैनिक जीवन में उपयोग व पुनः उपयोग करते हैं | ये सभी वस्तुएँ हम प्राकृतिक संसाधनों से संसोधित करते और निर्मित करते हैं | यह मानव है | जो शारीरिक और मानसिक प्रयासों से प्राकृतिक संसाधनों को उपयोगिता की वस्तु में बदल देता हैं ।उत्पादन के लिये ऐसी सुविधाओं के विकास और उन्हें उपयोगी संसाधनों में परिवर्तित करने के लिए मनुष्य एक अच्छे संसाधन की भूमिका निभाता है | बिना मनुष्य के अन्य संसाधनों को सही ढग से विकसित और उपयोग नही किया जा सकता हैं | इसलिये संख्या के साथ - साथ लोगों की गुणवत्ता दोनों ही देश के वास्तविक और सर्वोत्तम संसाधन हैं | उपरोक्त बातों को ध्यान में रखते हुए लोगों कि संख्या जो अधिक अन्तराल पर जनगणना द्वारा निर्धारित किया जाता हैं | भार हो सकता है | लेकिन गुणात्मक जनसंख्या देश की मानव पूंजी बन जाता हैं | मानव संख्या को मानव पूंजी में परिवर्तित करने के लिए देश को लोगों के स्वास्थ्य एवं पौष्टिक आहार की व्यवस्था, सही शिक्षा, विशिष्ट प्रशिक्षण एवं उनके जीवन में गुणात्मक बदलाव लाने के लिए देश को बहुत बड़ा निवेश करने की आवश्यकता पड़ती हैं | मानव के जीवन में गुणात्मक सुधार के लिए सरकार एवं समाज द्वारा किया गया निवेश बहुत महत्व रखता हैं | इसलिए महत्वपूर्ण बात समझने की है कि मानव संसाधन के विकास के रूप में एक वस्तु और विकास में भागीदारी हैं | यह मानव संख्या को उपयोगी संसाधन में परिवर्तित कर देता हैं |

जनसंख्या को मानव संसाधन बनाने के कारक :- लोगों की शिक्षा, स्वास्थ्य और पोषण की स्थिति और उनके विशेष प्रशिक्षण मानव संसाधन के रूप में जनसंख्या की गुणवता निर्धारित करते हैं ।लेकिन इनके अलावा सामाजिक जनसांख्यकी कारक प्रमुख हैं, जिसका प्रभाव जनसंख्या पर एक संसाधन के रूप में पड़ता हैं ।

जनसंख्या वितरण (2) जनसंख्या परिवर्तन (3) जनसंख्या संरचना

जनसंख्या वितरण :- संसाधन प्राकृतिक हो या कोई अन्य उनका वितरण एक समान नही है ।उदाहरण के लिये जंगल या लौह अयस्क या कोयला जैसे प्राकृतिक संसाधन दुनिया में एक समान रूप से वितरित नहीं हैं | हमारे देश में वितरण में भी एकरूपता नही हैं ।मानव संसाधन के साथ भी यही मामला हैं ।वे दुनिया में हर जगह पर समान रूप से नही फैले हैं ।इनकी संख्या बदलती रहती हैं ।एक क्षेत्र में आबादी के प्रसार को जनसंख्या वितरण कहते हैं ।

जनसंख्या का घनत्व :- किसी भी देश, प्रदेश या देश की तुलना जनसंख्या धनत्व द्वारा की जाती है ।घनत्व का निर्धारण करने के लिए एक विशिष्ठ क्षेत्र में रहने वाले लोगों की संख्या में उस क्षेत्र के कुल क्षेत्रफल से विभाजित किया जाता है | यह प्रति वर्ग किमी. क्षेत्र में रहने वाले व्यक्तियों की औसत संख्या बताता है ।इसकी गणना के लिए सूत्र इस प्रकार हैं |

जनसंख्या का घनत्व = एक परिभाषित क्षेत्र इकाई में लोगों की कुल संख्या

उसी क्षेत्र विशेष का कुल क्षेत्रफल वर्ग किमी. में

जनसंख्या घनत्व और उसके वितरण को प्रभावित करने वाले कारक :- संसाधनों की उपलब्धता भौगोलिक विशेषताओं द्वारा प्रभावित होती हैं। जो असमान वितरण के कारण है। इसलिए जनसंख्या का घनत्व और विवरण भी असमान है। जनसंख्या के वितरण और घनत्व को प्रभावित करने वाले कारकों को दो प्रमुख वर्गो में रख सकते हैं।

(1) प्राकृतिक (2) सामाजिक - आर्थिक ।

1) प्राकृतिक कारक :- जनसंख्या के वितरण और घनत्व को प्रभावित करने वाले तीन प्रमुख प्राकृतिक कारक हैं | पानी, उच्चावच, जलवायु और मिट्टी (मृदा) ।

उच्चावच :- जो क्षेत्र ज्यादा सुगम्य हैं, वहाँ लोगों द्वारा बसावट करने से भारी होने की सम्भावना है | यही कारण है कि सपाट मैदानों में ज्यादा बसावट देखने को मिलती हैं। जबकि बीहड़ उच्चावच वाले पर्वतीय और पठारी भाग ऐसे नही हैं। अगर आप जनसंख्या घनत्व और वितरण को उतरी मैदान और पर्वतीय क्षेत्रों से तुलना करें तो आप उच्चावच का प्रभाव प्रत्यक्ष अनुभव कर सकेंगे। उच्चावच: भू सतह की ऊचाई में बदलाव जिसके कारण पहाड़ियों एवं घाटियों का निर्माण होता है ।

जलवायु :- जनसंख्या के वितरण और घनत्व को प्रभावित करने वाले कारकों में से एक महत्वपूर्ण कारक जलवायु की स्थिति हैं। अनुकूल जलवायु मनुष्य के रहने के लिए सुविधाजनक स्थिति प्रदान करती है। जनसंख्या के उच्च घनत्व उन क्षेत्रों में ज्यादा हैं जहाँ जलवायु अनुकूल पाई जाती है। लेकिन कठोर जलवायु अर्थात बहुत गर्म, बहुत ठंडा, बहुत सूखा, बहुत नम क्षेत्रों में कम घनत्व होता है। भारत में शुष्क जैसे राजस्थान एवं अति ठंडा क्षेत्र जैसे जम्मू और कश्मीर घाटी ,हिमाचल प्रदेश और उतराखण्ड में निम्न जनसंख्या घनत्व हैं ।

मिट्टी (मृदा) :- मनुष्य कृषि के लिए मिट्टी की गुणवता पर निर्भर करता है। इसलिये उपजाऊ मिट्टी के क्षेत्र जैसे उत्तर भारत और तटीय जलोढ़ मैदानों में जनसंख्या का उच्च घनत्व है। दूसरी और कम उपजाऊ मिट्टी के क्षेत्रों जैसे - राजस्थान, छतीसगढ़ और मध्यप्रदेश के कुछ हिस्सों में जनसंख्या का कम घनत्व हैं ।

(2) सामाजिक व आर्थिक कारक :- जनसंख्या का घनत्व और वितरण निम्न सामाजिक आर्थिक परिस्थितियों पर निर्भर हैं -

औधोगिकरण और शहरीकरण :- जैसा कि आप हमेशा देखते हैं उधोग धंधो वाली जगह पर बड़ी संख्या में लोग निवास करते हैं। वे शहरी क्षेत्रों और नगरों में रहना पसंद करते हैं। खनिज संसाधन से समृद्ध क्षेत्र भी बड़ी जनसंख्या को आकर्षित करते हैं। इसके अलावा शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाएं भी इन क्षेत्रों में बेहतर हैं। भारत के बड़े नगरों जैसे दिल्ली, मुंबई, बंगलौर, हैदराबाद, चेन्नई, कोलकाता और कई अन्य उच्च घनत्व के केन्द्र हैं ।

परिवहन व संचार :- अन्य भागों की तुलना में देश के कुछ भागों में परिवहन और संचार सुविधाओं के साथ उत्तरी मैदानी क्षेत्र में परिवहन काफ़ी अच्छा है | परन्तु उत्तर पूर्वी क्षेत्रों में यह व्यवस्था उतनी अच्छी नहीं है। ऐसे सभी क्षेत्रों में जहाँ सार्वजनिक सुविधाओं का विकास अच्छा है, अपेक्षाकृत उच्च जनसंख्या घनत्व मिलता है ।

जनसंख्या परिवर्तन :- किसी भी देश में मानव संसाधन के रूप में जनसंख्या का गुणात्मक सम्बन्ध यहाँ के जनसंख्या परिवर्तन के प्रतिरूप से काफ़ी प्रभावित होता है । यह परिवर्तन जनसंख्या की अधिकता या जनसंख्या में कमी के संदर्भ में हो सकता हैं । हलाकि दुनिया की आबादी अभी भी बढ़ रही है | कुछ ऐसे भी देश हैं जहां जनसंख्या घट रही है । जनसंख्या परिवर्तन की दोनों स्थितियों में मानव संसाधन की गुणवता पर उनका प्रभाव पड़ता हैं । भारत की जनसंख्या लंबे समय से बढ़ रही हैं । वर्ष 1901 में 238 करोड़ की आबादी से वह वर्ष 2001 में 1028 करोड़ हो गई हैं । दूसरी ओर पश्चिमी यूरोपीय देशों में जनसंख्या घट रही हैं । जनसंख्या परिवर्तन निम्न कारक जिम्मेदार हैं ।

जनसंख्या परिवर्तन के कारक :- किसी भी देश की जनसंख्या में वृद्धी या कमी के तीन प्रमुख जनसांख्यकीय कारक होते हैं ।

जन्म दर :- एक निश्चित भू-भाग पर किसी दिए वर्ष में प्रति हजार जनसंख्या के तुलना में कुल जन्मे बच्चों की संख्या शुद्ध जन्म दर कहलाती है । इसे जन्मदर कहते हैं ।

जन्मदर = किसी क्षेत्र में एक वर्ष के अंतर्गत जिंदा जन्मे बच्चों की संख्या x 100

उसी क्षेत्र में मध्य वर्ष की जनसंख्या

मृत्यु दर : एक विशेष क्षेत्र के तहत् दियें गये वर्ष में प्रति हजार जनसंख्या में से होने वाली मौतों की संख्या शुद्ध मृत्यु दर कहलाती है । सामान्य तौर पर इसे मृत्यु दर कहते हैं ।

मृत्यु दर = किसी क्षेत्र में एक वर्ष के अंतर्गत मरने वाले लोगों की संख्या संख्या x 100

उसी क्षेत्र में मध्य वर्ष की जनसंख्या

प्राकृतिक वृद्धि दर :- प्राकृतिक वृद्धि दर जन्म दर और मृत्यु दर के बीच का अंतर है । इसलिये प्राकृतिक वृद्धि दर = जन्म दर - मृत्यु दर ।

इन सभी के अलावा सबसे महत्वपूर्ण कारकों में निरक्षरता, शिक्षा निम्न स्तर, असंतोषजनक स्वास्थ्य, पोषण की स्थिति और गरीबी हैं । पुरुष बच्चों की वरीयता, छोटी उम्र में शादी धार्मिक विश्वास और महिलाओं का समाज में निम्न स्तर आदि कुछ अन्य महत्वपूर्ण - सांस्कृतिक कारक हैं ।

जनसंख्या संरचना :- जन्म दर और मृत्यु दर के बीच का अंतर जनसंख्या परिवर्तन की गति और प्रवृति का निर्धारण करता है । वास्तव में यह प्रभाव जनसंख्या संरचना को प्रभावित करता है | भारत में जनसंख्या संरचना के निम्न पहलू हैं ।

आयु संरचना :- देश के वर्तमान और भविष्य के विकास के लिए आबादी का उम्र संरचना का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है । सामान्यतया आबादी को तीन वर्गो में रखा जाता है । बच्चे (0-14 वर्ष), वयस्क (15-60 वर्ष) और वृद्ध (60 वर्ष की उम्र से ज्यादा) यह स्पष्ट है कि बच्चों की संख्या में गिरावट और वयस्कों की संख्या में वृद्धि हो रही है ।

हालाकि वृद्धों की आबादी भी बढ़ रही हैं।वृद्ध और बच्चों की कुल आबादी को आश्रित आबादी कहतें हैं।जब आश्रित आबादी की संख्या बढ़ती हैं तो निर्भरता अनुपात ज्यादा हो जाता है।इसके कारण सरकार को बच्चों के विकास और वृद्धों के कल्याण पर ज्यादा खर्च करना पड़ता हैं।

निर्भरता अनुपात = निर्भर जनसंख्या (0-14 वर्ष तथा वर्ष 60 वर्ष से अधिक संख्या x 100

कार्यरत जनसंख्या (15 - 60)

किशोर एक अलग जनसंख्या समूह के रूप में :- जनसंख्या के उम्र संरचना को समझने के लिए विशिष्ट समूह के रूप में युवा वर्ग पर जोर देना नवीनतम दृष्टिकोण हैं।वास्तव में बचपन और वयस्कता के बीच जीवन के चरण को (10 साल और 19 कुछ और साल के बीच में) किशोरावस्था के रूप में जाना जाता हैं।इस आयु वर्ग के व्यक्तियों को किशोर के रूप में पहचानते हैं।किशोरावस्था को उस अवधि के रूप में परिभाषित किया जाता हैं।जिसमे शारीरिक ,मनोविज्ञानिक और सामाजिक परिपक्ता आती है जो यौवनारभ में यौवनपूण प्रजनन परिपक्व होती है।

लिंग संरचना :- मानव संसाधन के रूप में किसी भी देश की जनसंख्या की लिंग संरचना एक महत्वपूर्ण गुणात्मक सूचक हैं | लिंग अनुपात प्रति 1000 पुरुषों पर महिलाओं की संख्या के आधार पर समझा जाता हैं।किसी भी समय पर पुरुषों और महिलाओं के बीच मौजूदा समान स्थिति मापने के लिए यह एक महत्वपूर्ण सामाजिक सुंचक है| लिंग अनुपात अनुकूल होना चाहिए।लेकिन हमारे देश में लिंग अनुपात हमेशा से महिलाओं के लिए प्रतिकूल बना हुआ है | और चिंता की बात यह है कि यह गिरावट लगातार बनी हुई हैं।वर्ष 1901 में प्रति 1000 पुरुषो पर 972 महिलाएं थी।वर्ष 2001 में यह घटकर 933 हो गई।लिंग अनुपात की गणना निम्न प्रकार हैं।

निर्भरता अनुपात = एक विशेष क्षेत्र में कुल स्त्रियों की संख्या x 100

उसी क्षेत्र में पुरुषों की संख्या

बाल लिंग अनुपात :- देश में बाल लिंग अनुपात में गिरावट की प्रवृति बड़ी चिंता की बात है।0-6 वर्ष की आयु में लिंग अनुपात लगातार कम होता जा रहा हैं।29 राज्यों और 7 संघ शासित क्षेत्रों में से केवल चार राज्यों यानि केरल, मिजोरम, सिक्किम, त्रिपुरा और लक्ष्यदीप केन्द्र शासित इन क्षेत्रों में ही बाल लिंग अनुपात समग्र लिंग अनुपात के रूप में हैं।बुरी तरह से प्रभावित राज्यों में हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, गुजरात, पंजाब और उत्तरांखण्ड और संघ शासित क्षेत्रों में चंडीगढ़ और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली हैं।बाल लिंग अनुपात इस बात को दर्शाता है कि इन राज्यों में कन्या भ्रूणहत्या की प्रथा आज भी हैं।

ग्रामीण व शहरी संरचना : - भारत किसानों की भूमि और गावों का देश रहा है।बीसवीं सदी के शुरुआत में दस लोगों में से नौ लोग गाँव में रहते थे।हमारी आबादी का लगभग तीन चौथाई लोग आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं। भारत में शहरी क्षेत्र उन्हें कहा जाता हैं जहां तीन चौथाई से ज्यादा लोग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से गैर कृषि कार्य

में सलंग्न हो | जनसंख्या कम से कम 5000 तथा जनसंख्या घनत्व 400 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. हो। वर्तमान में लोग शहरीकरण की ओर बहुत ही तेजी से आगे बढ़ रहे है |

साक्षरता :- साक्षरता किसी भी समाज के विकास का एक महत्वपूर्ण संकेतक है | जैसा की जनगणना रिपोर्ट में परिभाषित किया गया है - सात वर्ष या उससे ज्यादा का व्यक्ति किसी भी भाषा में समझदारी के साथ लिखना और पढ़ना जाने वह साक्षर कहलाता है | 1951 में हमारे देश में साक्षरता दर 18.33 प्रतिशत थी | यह 2001 में बढ़ कर 65.37 प्रतिशत हो गई है | हमारे देश में 2001 में उच्चतम साक्षरता केरल राज्य की 90.86 प्रतिशत है | लेकिन सामान्य रूप से पुरुषों की तुलना में महिला साक्षरता दर कम है |

भारत में जनसंख्या नीतियां :- अंतरिम सरकार द्वारा 1938 में एक राष्ट्रीय योजना समिति स्थापित की गई जिसमें जनसंख्या पर एक उप - समिति बनाई | इस समिति ने 1910 में अपने संकल्प में कहा, “सामाजिक अर्थव्यवस्था परिवार की ख़ुशी और राष्ट्रीय योजना के हित में परिवार नियोजन और बच्चों की सीमा आवश्यक है |” 1952 में भारत दुनिया का पहला देश बना जो राष्ट्रीय जन्म जनसंख्या परिवार नियोजन पर बल देते हुए कार्यक्रम का शुभारम्भ किया | कार्यक्रम का उद्देश्य जन्म दर को कम कर राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की आवश्यकता के स्तर पर जनसंख्या को स्थिर करना था | वर्तमान में हम नवीनतम जनसंख्या नीति को समझने की कोशिश करेंगे जो भारत सरकार द्वारा 2000 में अपनाया गया था |

राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 :- राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 जनसंख्या के मुद्दों पर अपने द्रष्टिकोण में गुणात्मक परिवर्तन दर्शाता है। यह सीधे जनसंख्या नियंत्रण पर जोर नही देता हैं। इसमें कहा गया है कि आर्थिक और सामाजिक विकास का उद्देश्य लोगों के जीवन में गुणात्मक सुधार करना | उनके कल्याण में वृद्धी करना, समाज में लोगों को सुअवसर विकल्प प्रदान कर उन्हें उत्पादनकारी परिसम्पति के रूप में विकसित करना हैं। जनसंख्या स्थिर करना सतत विकास को बढ़ावा देने के लिये अनिवार्य व आवश्यक हैं। राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 के तत्कालीन उदेश्य गर्भनिरोधक, स्वास्थ्य देखभाल में बुनियादी सुविधाओं व स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं की अपूर्ण जरुरतों को पूरा करना है | इसके साथ ही साथ प्रजनन एव: शिशु स्वस्थ की देख भाल के लिय एकीकृत सेवा प्रदान करना है | मध्यकालीन उद्देश्य कुल प्रजनन दर को 2010 तक प्रतिस्थापन दर तक लाना है | जिसके लिए अन्तर क्षेत्रीय संचालन रणनीतियों की जोरदार क्रियान्वयन नीति है | 2045 तक सतत आर्थिक विकास और सामाजिक विकास और पर्यावरण संरक्षण के साथ एक स्थिर जनसंख्या प्राप्त करना है |

महिला सशक्तिकरण :- मानव संसाधन के रूप में जनसंख्या की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिये महिलाओं का सशक्तिकरण महत्वपूर्ण है | महिलाओं के लिए एक राष्ट्रीय आयोग 1990 में पारित अधिनियम के माध्यम से 1992 में अस्तित्व में आया | आयोग को व्यापक कार्य आवंटित किया गया। इसमें महिलाओं के हितों की सुरक्षा हेतु उनके साथ होने वाले दुरव्यवहार की जानकारी की जांच पडताल करना भी जरूरी है | इनका परम उद्देश्य उन्नति, विकास और महिलाओ के सशक्तिकरण को बढ़ावा देना है | भेद-भाव के सभी रूपों को समाप्त करना है | यह कदम उनके जीवन और गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में संक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करेगा | महिला सशक्तिकरण की जरुरतों और प्रयासों के बारे में पढ़ सीख और समझ सकते हैं | जब विस्तार से सामाजिक आर्थिक विकास और वंचित समूहों के सशक्तिकरण पाठ में पढाया जायेगा |